Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –5, Nov 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में एक अनुशीलन

सुमन यादव
Department Of Hindi , Singhania University,Rajasthan.

सारांश :

परिवार, समाज की संगठनात्मक दिशा का महत्त्वपूर्ण आधार है। मूलतः परिवार से ही व्यक्ति की सामाजिक क्रियाएँ प्रारम्भ होती है तथा परिवार ही उसके व्यवहारों का प्रारम्भिक संचालनकर्त्ता है। व्यक्ति को परिवारों के आदर्शों व मूल्यों का पालन करना होता है। इनका पालन न होने की स्थिति में परिवार विश्रृंखलित हो जाता है।

प्रस्तावना :

परिवार के प्रकार दो होते हैः–

- संयुक्त परिवार
- एकल परिवार

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों का एक प्रमुख तत्त्व परिवार विषयक रोजमर्रा के व्यवहारिक जीवन का सूक्ष्म चित्रण कहा जा सकता है कि यह तो हमारा देखा और बरता हुआ है। इसमें ऐसा नया और उल्लेखनीय क्या है? उत्तर होगा कि परिवार और सम्मिलित परिवार युगीन परिस्थितियाँ बदलने पर भी भारतीय जीवन के अति निकट है। हम पारिवारिक जीवन से विशेष आत्मीयता अनुभव करते है और उसके अर्थ खोजना चाहते है। इसलिए राजेन्द्र यादव ने साक्षात्कार में एकल व संयुक्त परिवार विद्यमान है। 'सारा आकाश' उपन्यास में जहाँ संयुक्त परिवार की गहराई से खबर ली गई है तथा उसकी विसंगतियों पर चर्चा हुई है वहीं उखड़े हुए लोग, 'शह और मात' 'एक इंच मुस्कान', 'अनदेखे अनजान पुल', मन्त्रविद्ध, 'कुलटा' उपन्यासों में एकल व संयुक्त परिवार का चित्रण साथ–साथ हुआ है।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में विघटनोन्मुख परिवारों का भी वर्णन हुआ है। 'सारा आकाश' उपन्यास में संघर्षशील निम्न मध्यवर्गीय परिवार को चित्रित किया गया है। परिवार की आर्थिक हालत नाजुक है व इसमें कुल नौ सदस्य है। आमदनी के साधनों में पिता की पेंशन तथा बड़े भाई की नौकरी है। परिवार में पढ़ने वालों की संख्या तीन है।

समर की पत्नी प्रभा पढ़ी–लिखी युवती है। जब वह घर में पर्दा नहीं करती तो हंगामा मच जाता है। इस पर समर की माँ बहुत सुनाती हैं समर व प्रभा की संवादहीनता के कारण नवविवाहिता को परिवार में अनेक तरह की परेशानियां झेलनी पड़ती हैं प्रभा घर का सारा काम करती है फिर भी डाँट खानी पड़ती है। परन्तु बाद में एक साल बाद जब उसका पति उससे बोलने लगता है। जब प्रभा कुछ खुश होती है।

समर को जैसे ही प्रुफ रीडर की नौकरी मिलती है परिवार का उसके तथा प्रभा के प्रति दुश्टिकोण बदल जाता है लेकिन वेतन का भुगतान न होने के कारण समर के पिता पर चालाक होने का आरोप लगाते है। पिता समर को पिटते है और तत्काल घर खाली करने के लिये कहते है। इस तरह परिवार विघटनोन्मुख हो जाता है।

संयुक्त परिवार के विषय में शिरीष (सारा आकाश, अपने विचार प्रकट करते हुए कहता हैः– '' इस संयुक्त पिरवार की परम्परा को तोड़ना ही होगा– आप खुद जिन्दा रहना चाहते है या चाहते हैं कि आपकी पत्नी भी जिन्द, रहे तो इसके सिवाय कोइ रास्ता नहीं कि अलग रहिए।

सारा आकाश की पारिवारिक समस्याओं के कई कारण हो सकते हैं प्रथम है कि यह एक सम्मिलित परिवार है। इसमें कमाने वाले केवल दो व्यक्ति है जिनकी आय बड़ी सीमित है और खर्चने वाले नौ प्राणी है। समर अभी पढ़ रहा है। उसे समुचित शिक्षा प्राप्त करने आय का कोई साधन जुटाना है तब वह अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा। उसके बाद उसके विवाह की बात सोची जा सकती है। किन्तु घर में आश्रित एक अन्य व्यक्ति (प्रभा) को अन्ततः स्नेह और स्वागत नहीं मिल पाता। इस प्रकार की अविचारशीलता परिस्थिति को उलझाने का बड़ा कारण है।

उपन्यास में एक मनोवैज्ञानिक पहलू भी है कि जिन्होने दहेज के रूप में बहुत कुछ मिलने की आशाएँ पाल रखी हों और वैसा न मिल पाए तो नववधू के साथ दुराचार होना इसका शोषण करना एक सामान्य घटना हो जाती है और जैसा कि आप उपन्यास में देख रहे है। प्रभा इसी कुकृत्ति की शिकार बन कर घुट–घुट कर मर रही है।

'' उखड़े हुए लोग'' उपन्यास में माया देवी का परिवार उसकी महत्त्वकांक्षा तथा प्रेम चाहत के कारण बिखर चुका है। उसका विवाहित प्रेमी जो राजनेता तथा पूँजीपति दोनों है केवल माया देवी की सम्पत्ति की चाहत में उसे उलझाए हुए है।

इसी तरह ''कुलटा'' में पति पत्नी के द्वन्द एवं असमान व्यवहार के मानसिकता कि कुटिल बुनवाट से परिवार टुट रहा है। इसलिये यह कहना कि मात्र संयुक्त परिवार ही पारिवारिक झंझटों का केन्द्र है पूर्णतः सत्य नहीं है। ऐसे अनेक परिवार मिल जायेगें जहां पर पति–पत्नी एकाकी रहते हैं लेकिन उनके बीच एक रहस्यमयी चुप्पी व एक दुसरे के प्रति अनजान भय व्याप्त रहता हैं पत्नी पति की इच्छा अनुसार आचरण करना चाहती है लेकिन पति की दुनिया कुछ अलग होती है पत्नी के समर्पण का उसके लिए महत्त्व नहीं होता। ''उखड़े हुए लोग'' उपन्यास में पारिवारिक जीवन को कई भूमिकाओं में चित्रित किया गया है। उपन्यास में तीन परिवार है । प्रथम परिवार शरद कुमार व जया के रूप में आता है, शरद आगरा में रहता हैं वह एम.ए. एलण्एलण्बी है तथा वकालत की ट्रेनिगं ले रहा है। जया वर्मा बीण्एण, बीण्टीण है तथा स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य करती है। दोनों में परस्पर प्रेम है लेकिन उनकी जातियाँ भिन्न होने के कारण वे सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप विवाह नहीं कर सकते। शरद व जया सामाजिक रीति–रिवाजों की परवाह किए बिना अन्तरजातीय विवाह कर लेते हैं।

वैवाहित सम्बन्ध स्थापित करने के बाद शरद जया को पारिवारिक दायित्वों की चिन्ता होती है '' यहां दोनों अनुभवहीन है क्या, कैसे होगा, की चिन्ता उन्हें सताती रहती हैं शरद व जया एक दूसरे के प्रति समर्पित है जया तब तक भोजन नहीं करती जब तक शरद घर नही आ जाता। जहाँ दोनों में परस्पर समर्पण भाव है, वहीं कभी–कभी आपसी मनमुटाव भी हो जाता है जो गृहस्थ जीवन में आता ही रहता हैं यह सब एक' दूसरे को अच्छी तरह न समझ पाने के कारण होता है। इस तनातनी के बावजूद शरद व जया का पारिवारिक जीवन परस्पर अल्प समय तक ही समपर्णभाव से चलता है।

उपन्यास में दूसरा पारिवारिक जीवन मायादेवी व उसके पति के रूप में सामने आता है। मायादेवी गाँधी जी के प्रभाव में आ कर सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेती है। इस आन्दोलन में वह देशबन्धु से मिलती है वह उससे प्रेम करने लग जाती हैं इसके लिए वह अपने पति को जहर दिलवा देती है। वह अपनी बेटी पद्मा की ओर भी ध्यान नहीं देती हैं पद्मा वहां से भाग जाना चाहती है परन्तु मायादेवी उसे ऐसा नहीं करने देती। वह उस देशबन्धु के बेटे सत्या से प्रेम करने के लिए कहती है। एक दिन देशबन्धु शराब के नशे में पद्मा के कमरे में चला जाता है और उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है लेकिन पद्मा खिड़की से कुद कर आत्महत्या कर लेती है।

उपन्यास समाजगत वैवाहिक रूढ़िवादिता पर करारी चोट करता है तथा विवाह संस्था के बदलते प्रतिमानों की तरफ समाज का ध्यान आकृष्ट करना चाहता है।उपन्यासकार इन कथा–सूत्रों के माध्यम से कहना चाहता है कि अगर परिवार में सब कुछ इसी तरह होता रहा तो परिवारिक जीवन बिखर जायेगा जिससे परिवार में दूसरी तरह की समस्याएँ आयेगी। परिवार में आपसी मेल जोल व सौहार्द की समाप्ति पर

परिवार को टूटते देर नहीं लगती हैं यादव जी उपन्यास में वर्णित नकारात्मक दुष्टान्तों के माध्यमों से परिवार के सकारात्मक रूप की ओर बढ़ने का संकेत दे रहे हैं यदि देशबन्दु मायादेवी जैसे व्यक्तियों की पारिवारिक दृष्टि नहीं बदली तथा वे तुच्छता में जीन रहे तो पारिवारिक जीवन इसी तरह टूटता रहेगा।

पारिवारिक द्वंद विशेषकर पति' पत्नी का द्वंद्वपारिवारिक टूटन का पहला कदम व संकेत है। 'कुलटा' उपन्यास में पति–पत्नी के मध्य द्वंद्व, तनाव, कड़वाहट दिखाइ दे रही है। मिसेज तेजपाल खुले स्वभाव की स्त्री है। परिवार के बाद वह सेना के लोगों की बंधी –बधाई जिन्दगी में घुटन महसुस करने लगती हैं वह अपने पति मेजर तेजपाल की हर बात के विरूद्ध आचारण करती है। उसका हमेशा गाते रहना मेजर तेजपाल को अच्छा नहीं लगता' मेजर तेजपाल व मिसेज तेजपालल की अभिरूचियाँ एकदम विपरीत है। परिवेश और पति की मानसिकता के दबाव के कारण मिसेज तेजपाल कुछ समझौते करती है, अपने शौंकों को छोड़ देती है। उनका रवैया प्रतिक्रियात्मक रहता हैं मिसेज तेजपाल व मिस्टर तेजपाल सन्तानहीन हैं इस स्थिति ने भी इनके मन को कठोर बनाया हैं शायद यही कारण है कि मिसेज तेजपाल हर समय गुनगुनाती रहती हैं वे अपने सम्बन्धों को तनावमुक्त करने का भी प्रयत्न नहीं करते इस समस्या के पीछे उन दोनों के विचारों में विद्यमान भिन्नता हैं विचारों की भिन्नता इसलिए है कि वे एक–दूसरे को समझ नहीं पाते, उनकी परिस्थितियां अलग –2 है मेजर तेजपाल अपने नियमों के अनुसार जीवन जीना चाहते है, मिसेज तेजपाल स्वच्छन्दतावादी है, वे प्रत्येक कार्य अपनी रूचि से करती हैं इस कारण पारिवारिक जीवन में द्वंद्वआ जाता है और परिवार टूट जाता है।

'शह और मात' उपन्यास में राजेन्द्र यादव ने राजकुमारी अपर्णा व उसके पति के पारिवारिक जीवन की एक छोटी–सी झलक प्रस्तुत की हैं राजकुमारी अपर्णा का पति अपनी पत्नी को शारीरिक यातनाएँ देता हैं वह उसे मारता है उसके परिवार से भी नहीं मिलने देता अपर्णा का पति उसके साथ निकृष्ट व्यवहार करता हैं उसे मात्र भोग समझता हैं बराबरी का दर्जा नहीं देता वह अनेक रखैल रखता है तथा दिन रात शराब के नशे में डुबा रहता है। इन सब परिस्थितियों से तंग आकर अपर्णा अपने पिता के घर आ जाती है तथा अन्त तक नहीं रहती है। इस तरह इनका पारिवारिक जीवन पति के अत्याचारों व अहंभाव की वजह से निश्प्राण हो चुका है। ऐसी पृष्टभूमि की रचना हो चुकी है, यही कारण है कि सामंती मानसिकता टूटी है।

'मन्त्रविद्व, उपन्यास में राजेन्द्र यादव ने' घटित और घटनीय के बीच का तनाव' प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में पारिवारिक जीवन को दो परिवारों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में मुख्य कथा के रूप तारकदत्त व सुरजीत कौर का चित्रण हुआ है। तारकदत्त दिल्ली के एक प्राइवेट महिला कॉलेज में शिक्षक हैं वह अपने आपको अविवाहित बताकर उसी कालेज में पढ़ने वाली सुरजीत कौर के साथ आर्य–समाज मंदिर में शादी करने के उपरान्त कलकत्ता के लिए भाग खड़ा होता है जबकि उसकी पहली पत्नी के तीन बच्चे है जो बनारस में रहते हैं कलकत्ता पहुँचकर तारकदत्त व सुरजीत अपने एक बंगाली मित्र मोहनदा के यहाँ ठहरते है। वहाँ रहकर जब कई दिन तक कोई नौकरी तारक नहीं करता तो सुरजीत व तारक के मध्य तनाव आ जाता हैं वह सुरजीत को भी नौकरी नहीं करने देता इस कारण भी दोनों के मध्य अन्त द्वंद्वहो जाता है।

मोहनदा व इन्दु का पारिवारिक जीवन कभी कठोर तो कभी सारस हो जाता है। मोहनदा के विवाहपूर्ण प्रसंग को लेकर पति–पत्नी में तनाव रहता हैं पति–पत्नी को इस तनाव से तभी छुटकारा मिलता है जब तारक व सुरतीत उनके यहाँ ठहरते हैं इनके आने से दोनों का ध्यान बंट जाता हे और वे अपने। व्यक्तिगत तनाव को भूल जाते है लेकिन जैसे ही तारक व सुरजीत वापस दिल्ली लौटते हैं तो उन्हे यही तनाव फिर से घेर लेता है।

घरेलू खर्चो के कारण इन्दु के मन में उथल–पुथल रहती है। तारक व सुरजीत के उनके यहां ठहरने से उनके महीने भर का राशन पन्द्रह दिन में ही समाप्त होने लगता है तो इन्दु इस खर्च से छुटकारा पाने की सोचती हैं इन सब कारणों से भी पारिवारिक जीवन में जनाव आ जाता है।

उपन्यासकार ने पारिवारिक सम्बन्धों पर भी यथास्थान प्रकाश डाला हैं विशेषकर सारा आकाश पारिवारिक सम्बन्धों के विकृत एवं परम्परागत रूप को ढ़ो रहा है।

संगठनमूलक सामाजिक संरचना के प्रथम तत्त्व के रूप में पारिवार सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत हुए हैं उपन्यासकार में परिवार के नकारात्मक पहलुओं के माध्यम से हमें सकारात्मक बनने का संदेश दिया हैं विवाह परिवार का आधार हैं यादवजी विवाह के तत्कालीन स्वरूप में परिर्वतन चाहते है।

मध्यवर्गीय परिवारों में अहंभावना घर कर चुकी है। इसी अहंभावना के कारण समर–प्रभा का पारिवारिक जीवन दु'खदायी हुआ है। अहंभावना का कारण एक–दूसरे के विचारों को न समझ पाना हैं परिवारिक अविचारशीलता के कारण वे अनेक कष्ट सहते है।

यादवजी के उपन्यास सामाजिक धरातल के हैं इन्होंने समाज में व्याप्त पारिवारिक समस्याओं को चित्रित किया है। पति पत्नी सम्बन्धों में व्याप्त तनाव को कम करके ही इस सम्बन्ध को और अधिक पवित्र किया जा सकता है। पति–पत्नी सम्बन्धों के विश्वास व सहयोग के अभाव में तनाव जन्म लेता है और यह तनाव तलाक कही सीमा तक पहुँचते देर नही लगाता उपन्यासकार सूत्र रूप में कहते है कि यदि आप पारिवारिक जीवन को सुखी व तनावरहित चाहते है तो अपनी इधर– उधर मुहँ मारने की प्रवृत्ति आपसी अविश्वास, अहंभाव को तिलांजली देनी होगी। अन्यथा पारिवारिक जीवन अस्त–व्यस्त रहेगा।

पारिवारिक सम्बन्धों में, युग गतिशीलता के कारण आत्मीयता कम हुई हैं पति–पत्नी, माता–पिता, संतानें, भाई–बहिन, ननद–भाभी तथा भाई–भाई के परम्परागत सम्बंधों में परिर्वतन हुए है। माता–पिता अपनी सन्तान से जो आशाएं रखते है, बेटा व बेटी उनकी आशा को पूरी नहीं कर पाते। भाई–बहिन के पारस्परिक प्रेम सम्बन्धों में बदलाव नजर आता हैं समर (सारा आकाश) जहाँ अपनी बहिन मुन्नी के दुःख से दुःखी है तो वहीं दूसरी तरफ अपर्णा (शह और मात) का भाई बहिन के रहने हेतु अलग घर बनवा देता है। वह अपने दाम्पत्य जीवन में बहिन का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं कर पाता। फलतः उसकी बहिन दूसरे मकान में रहती हैं अमला (एक इंच मुस्कान) की भी यहीं स्थिति हैं उसकी अपनी भाभी से कम ही बन पाती है। अमला अपने पिता का स्नेह प्राप्त करती है। रंजना (एक इंच मुस्कान) परिवार से सम्बन्ध–विच्छेद करके अमर जो उसका प्रेमी है ,के पास चली जाती है। भाई–भाई सम्बन्धों में मनमुटाव व दरार है उनके मध्य जिस तरह की पवित्रता होती हैं आज उसे ठेस लगी हैं कुल मिलाकर पारिवारिक सम्बंधों में परिवर्तन दुष्टिगोचर होता है।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत परिवार प्रणाली के ह्रास का चित्रण है। नगरीक जीवन की अपेक्षा गांवों में संयुक्त परिवार अधिक संख्या में पाये जाते है। नगरों में आवास की कमी होती है। जिससे बड़े परिवार एक साथ नहीं रह सकते और न ही इतनी आर्थिक क्षमताएँ होती है कि एक आदमी पूरे सम्मिलित परिवार का खर्च वहन कर सकता।

मध्य व निम्न मध्यवर्गीय परिवारों का आर्थिक पक्ष दिन–प्रतिदिन समस्याग्रस्त हो रहा हहै क्योंकि ऐसी पृष्ठभूमि का युवक शिक्षित होकर रोजगार के लिए सड़क पर आता है तो उसे निराशा हाथ लगती हैं ऐसे परिवारों में अधिकांश झगड़ों का कारण आर्थिक लेन–दे नहीं होता हैं अतः मध्य व निम्न मध्यवर्गीय परिवारों का आर्थिक गणित डगमगा चुका है। राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक जीवन के वे चित्र प्रस्तुत किए है, जो पाठक की समझ बढ़ाते है। उन्हे जो स्वीकार नहीं है, उसे चित्रित करते हुए उसे ध्वनित किया है, जो उन्हें जीवन में वांछित है। अर्थात् नकारात्मक के माध्यम से समाकरात्मक लक्ष्य पाने के लिए संघर्षरत रहे है। समाज की निरंतरता व्यक्ति–विशेष से न होकर व्यक्तियो के समूहों से है, जो प्राणि–शास्त्रीय सम्बन्धों के आधार पर बने होते है। इन समूहों को परिवार कहते है। इस तरह व्यक्ति जहाँ समाज की लघुत्तम इकाई है वहीं परिवार उसकी समवायपूर्ण लघु इकाई हैं सामाजशास्त्रीय दृष्टि से परिवार के अंतर्गत पति–पत्नी एवं बच्चे आते है। डॉ. श्यामाचरण दुबे के अनुसार परिवार में स्त्री और पुरूष दोनों को सदस्यता प्राप्त होती है, उनमें कम से कम दो विपरीत यौन व्यक्तियों के यौन सम्बन्धों की सामाजिकता स्वीकृति रहती है और उनके संसर्ग से उत्पन्न संतान मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं परिवार एक गार्हस्थ्य समूह है जिसमें माता–पिता और संतान साथ–साथ रहते हैं इनके मूल में दम्पत्ति और उनकी संतान रहती है। वहीं मनुष्य के जीवन की रक्षा एवं आवश्यकताओं के संदर्भ में परिवार का विशेष महत्त्व है। ग्रीन ने इस महत्त्व को स्वीकार किया है और उनका कहना है कि परिवार समाज की प्रमुख इकाई ही नहीं अपितु जीवन के लिए सबसे आवश्यक भी है। इसके दो कारण है– एक तो मनुष्य के लिए जीवन की रक्षा का प्रश्न है, वहपरिवार में रहकर संभव है। दूसरे मनुष्य की ऐसी आवश्यकताएँ भी होती है जो परिवार में

रहकर ही संभव हो सकती हैं परिवार की व्यापक परिभाषा देते हुए बर्जेस और लॉक ने लिखा है कि परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद लेने से पैदा होने वाले सम्बन्धोंद्वारा आपस में जुड़ा है। इस समूह के सदस्य छोटी–सी ग्रहस्थी का निर्माण करते है और पारिवारिक सम्बन्धों के रूप में एक दूसरे को अंतः क्रियाएँ करते है तथा एक समान संस्कृति का निर्माण तथा उसकी देख रेख करते है।

परिवार के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि समाज की आधारभूत इकाई परिवार, वास्तव में मानव–जाति को आत्म संतक्षितकरने, वंश की वृद्धि करने और जातीय जीवन की निरंतरता को बनाए रखने का मुख्य साधन हैं व्यक्ति, सर्वप्रथम पारिवारिक स्तर पर मूल्यों को ही आत्मसात करता है। किन्तु, चूँकि एक अभूर्त धारणा के रूप में समाज व्यक्तियों को पारस्परिक सम्बन्धों की व्यवस्था है, एवं परिवार उसकी लघुत्तम इकाई हैं इसलिये समाज को परिवार–रूपी छोटी–2 इकाइयों का समवाय कहा जा सकता है।